इकाई 14 व्यवहार और संभावना

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 व्यवहार और संभावना

14.2.1 भौतिक विशेषताएं

14.2.2 ऐतिहासिक स्थल

14.2.3 वन्य जीवन

14.2.4 संस्कृति

14.3 भंगुरता

14.4 बचाव के मार्ग

14.5 सारांश

14.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई में पर्यावरण के संरक्षक के रूप में पर्यटन की संभावना पर विचार किया गया है। इस इकाई में उस इकाई के बिलकुल विपरीत नजरिया अपनाया गया है जो पर्यटन को केवल पर्यावरण के विनाशक के रूप में देखती है। इस इकाई में यह सत्य भी स्वीकार किया गया है कि वास्तव में व्यवहार और संभावना के बीच एक निश्चित दूरी हो सकती है। अत: हमारा उद्देश्य आपको निम्नलिखित पक्षों से परिचित कराना है:

- संरक्षण के लिए पर्यटन में संभावनाएं,
- इसके वास्तविक उदाहरण,
- ऐसे प्रयासों में पर्यटन आयोजकों के सामने आई समस्याएं, और
- पर्यटन के संरक्षण के लिए उपयोग करते समय सतर्कता की आवश्यकता।

14.1 प्रस्तावना

परम्परागत रूप से पर्यटन को ऐसी मानवीय गतिविधि समझा जाता रहा है जो अपरिहार्य रूप से पर्यावरण के विनाश का कारण बनता है। इसे उस स्थल के लिए संरक्षक के स्थान पर अनिवार्य रूप से विध्वंसक समझा जाता है जिस पर वह विकसित हो सकता है अर्थात उसे आत्म-विनाशक समझा जाता है। किंतु इसे ऐसा नहीं होना चाहिए। आजकल पर्यावरण संबंधी चिंता और पर्यटन पर एक साथ विचार किया जा रहा है और दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है जिससे दोनों का हित होगा। पर्यटन को और अधिक 'उत्तरदायी' बनाकर और संरक्षण की "मानव जाति को अच्छा जीवन देने के लिए पर्यावरण का विवेकपूर्ण उपयोग" के रूप में नई परिभाषा देकर इनके बीच के विरोधों को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यटन और संरक्षण की सम्पूर्णता और अस्तित्व को महत्व दिया जा रहा है। अब यह अधिक ध्यान दिया जाने लगा है कि पर्यटक स्थल बहुमूल्य सम्पति है जिसे उसके वृहत वातावरण में प्रबंधन की सुविचारित नीतियों को अपना कर सुरक्षित रखना चाहिए। इस इकाई में इन तरीकों के ठोस उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

14.2 व्यवहार और संभावना

जैसा कि प्रस्तावना में व्यक्त किया जा चुका है नई 'अनुभूतियों और रणनीतियों में परिवर्तन, पर्यटन को संरक्षण के एक जबरदस्त प्रभावी साधन के रूप में देखा जा रहा है।

वास्तव में इसे अधिक से अधिक इसी प्रकार पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के संरक्षण और सुरक्षा के लिए उपयोग में लाया जा रहा है जैसे :

- भौतिक विशेषताएं
- ऐतिहासिक स्थल
- वन्य जीवन, और
- स्थान विशेष की संस्कृति

सार्वभौमिक दृष्टि से इस प्रकार के प्रयासों की असंख्य मिसालें हैं और हमने उनमें से कुछ को निम्नवत उपभागों में वर्णित करते हुए विचार विमर्श भी किया गया है ताकि आप ऐसे प्रयासों की संभावना और क्षमता के बारे में जान सकें।

14.2.1 भौतिक विशेषताएँ

किसी देश की भौतिक विशेषताएँ–भू-आकृतियाँ (पर्वत, खड़ी चट्टान आदि) मैदानी क्षेत्र, जल स्रोत (झील, नदी, जल प्रपात, समुद्र) समुद्र तट और अन्य प्राकृतिक स्थल और छटाएँ सदियों से मनुष्य को मोहित करती रही हैं और लुभाती रही हैं। वे हमेशा से आकर्षण का केंद्र रही हैं और सर्वाधिक 'प्रत्यक्ष' पर्यटक आकर्षण होने के कारण 'गैर जिम्मेवार पर्यटन' का सबसे ज्यादा कुप्रभाव इसी पर पड़ता है। हालाँकि भू-आकृतियों को पर्यटकों के द्वारा सबसे अधिक क्षति पहुँची है फिर भी पर्यटन द्वारा सुरक्षित रखे जाने की अधिकतम संभावना भी इन्हीं में है क्योंकि भौतिक दृष्टि से क्षतिग्रस्त धरातल को सुधारना वस्तुत: असंभव होता है और वह पर्यटन के लिए सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

पर्यटन के लिए भौतिक आकृतियों के संरक्षण की भूमिका उनकी आर्थिक उपयोगिता की अपेक्षा गौण है। सामान्य रूप से भौतिक आकृतियों की सुरक्षा उनके बचाव की दृष्टि से नहीं होती बल्कि उनकी पर्यटन के लिए संभावना अर्थात लाभ की दृष्टि से की जाती है। अधिकारी वर्ग टूर आपरेटर के साथ मिलकर केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण भू-आकृतियों के संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व में ऐसे बहुत से उदाहरण है। जिसमें पर्यटन पृथ्वी की भौतिक आकृतियों के संरक्षण के साधन के रूप में कार्य कर रहा है।

पर्यटन की संभावना के कारण ही दक्षिणी यूरोप के सुंदर समुद्र तट की सुरक्षा हो पाई ; आल्प पर्वत (विशेषकर स्वीटज़रलैंड और ऑस्ट्रिया में) विनाश से बच गए; आइसलैंड के ऊष्णोत्स (गाइजर) और उत्तरी आयरलैंड का विशाल सेतुक (काज़वे) संरक्षित रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के मध्य स्थित जल प्रपात और पाँच विशाल झीलों के परिसर की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों के लिए अपना आकर्षण बनाए रखने के कारण ही सुरक्षित बची है।

बरमूडा द्वीप पर्यटन के लिए संरक्षण का एक बहुत शानदार उदाहरण है जहाँ कुल राष्ट्रीय उत्पादन में पर्यटन का योगदान 50 % है, कोई परिवार एक कार से अधिक नहीं रख सकता है और गति सीमा 20 मील प्रति घंटा है जिससे पर्यावरण और पर्यटकों का बहुत हित होता है।

भारत में भू-आकृतियों के संरक्षण में पर्यटन की भूमिका को हालाँकि पूरी तरह समझा जा चुका है किंतु अभी यहाँ इसकी भूमिका नगण्य है। इसका एकमात्र उदाहरण हिमालय और समुद्री तट हैं जहाँ उनके प्राकृतिक वैभव को पर्यटन की संभावना को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित रखनें का प्रयास किया गया है।

14.2.2 ऐतिहासिक स्थल

भौतिक विशेषताओं के साथ ही ऐतिहासिक स्थल देश की पर्यटन सम्पति के महत्वपूर्ण भाग हैं। पर्यटन में उनकी सुरक्षा की संभावना भी मौजूद है। वास्तव में पर्यटन ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण में कई प्रकार से प्रेरणा और सहयोग प्राप्त करने का कारण रहा है।

भौतिक विशेषताओं के समान ही पर्यटन ने व्यापक आर्थिक लाभों की दृष्टि से ऐतिहासिक स्थानों के संरक्षण में सहयोग दिया है। पर्यटन के लिए अपने आकर्षणों के कारण प्रसिद्ध स्मारक स्थानीय अर्थव्यवस्था का आधार बनाते हैं। यही कारण है कि अधिकारी वर्ग राजस्व एवं रोजगार के इस महत्वपूर्ण साधन के नष्ट हो जाने के भय के कारण इसे सुरक्षित रखने पर बाध्य है। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोग, जो पर्यटन से अधिक लाभ उठाते हैं, भी इन ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण कार्यों में साझेदारी के लिए प्रेरित होते हैं।

इसके अतिरिक्त सामान्य रूप से सरकार भी इन खराब होते स्थलों के संरक्षण की प्रवृति को प्राथमिकता देती है क्योंकि ऐसे ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण में महंगी तकनीक की आवश्यकता होती है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि पर्यटकों से प्राप्त धन ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण वित्तीय साधन है।

वास्तविक उदाहरण के रूप में मिस्र के महान पिरामिडों को लिया समझा जाता है जिन्हें उनके अवलोकनार्थ आनेवाले पर्यटकों के आगमन को बनाए रखने के लिए पर्यटन द्वारा प्राप्त धन से अत्यंत आधुनिक सर्वश्रेष्ठ रखरखाव तकनीकों से दीर्घकाल के लिए सुरक्षित कर लिया गया है। लगभग ऐसी ही स्थिति ग्रीको-रोमन पुरातत्वीय विशाल परिसर और अमेरिका के प्राचीन स्थलों की है जो पर्यटकों के लिए अपने आकर्षण के कारण अच्छी तरह और पूर्ण रूप से सुरक्षित कर लिए गए हैं।

भारत में भी देश भर में फैले हुए बहुत अधिक संख्या में ऐतिहासिक स्थानों को उनकी पर्यटन संभावना के कारण सुरक्षित रखा जा रहा है। ये कार्य पर्यटकों के धन से किया जा रहा है। विशेष रूप से ताजमहल, जो विश्व के बहुत अच्छी तरह सुरक्षित किए गए स्मारकों में से एक है, को इतनी अच्छी तरह सुरक्षित नहीं रखा जा सकता था यदि उसमें विश्व स्तरीय पर्यटकों के लिए इतना आकषर्ण न होता और उनसे उतना धन अर्जित न किया गया होता। खजुराहो, जो अत्यंत उपेक्षित स्थिति में प्राचीन स्मारकों सहित पड़ा हुआ एक और गाँव था, अब एक विख्यात भारतीय ऐतिहासिक स्थान है--एक 'विश्व विरासत' जिसके लिए हमें पर्यटन का आभारी होना चाहिए, जिसने इस स्थान को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत में संरक्षण के साधन के रूप में एक और उदाहरण अत्यधिक लोकप्रिय और तीव्र गति से विकासशील 'विरासत स्थल' की धारणा है जिसमें पुरानी जर्जर हवेलियों और महलों का पारम्परिक शैली में पुनरुद्धार करके पर्यटकों के आवास की व्यवस्था की जा रही है।

14.2.3 वन्य जीवन

पर्यटन राष्ट्रीय उद्यानों, प्राकृतिक अभयारण्यों एवं पशु-पक्षी अभयारण्यों के निर्माण, विकास और संरचना द्वारा वन्य जीवन संरक्षण में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इन उद्यानों में नियमों का कड़ाई से पालन होता है और इसमें न केवल पक्षियों और पशुओं के लिए ही पर्यावरण का प्राकृतिक दशा में रखरखाव किया जाता है बल्कि पर्यटकों के आनन्द और खुशी का भी ध्यान रखा जाता है। शिकारी या सफारी में विशेषज्ञता रखनेवाले टूर ऑपरेटर अब जानवरों के जीवन की सुरक्षा और संरक्षण पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं और फोटोग्राफिक सफारी, राष्ट्रीय उद्यानों में घूमने, गेम रिजर्व और पारिस्थितिक यात्राओं में रुचि बढ़ती जा रही है। इस प्रकार पर्यटन के लिए 'संरक्षण अभ्यास' को बढ़ावा देने से दोनों को लाभ होता है।

इसके अतिरिक्त पर्यटन ने स्थानीय लोगों को जो अपनी जीविका के लिए जंगल पर ही निर्भर थे, को वैकल्पिक रोज़गार देकर पर्यावरण की सहायता ही की है। यही नहीं टूर ऑपरेटर से प्राप्त धन का उपयोग पर्यावरण को बनाए रखने में अत्यधिक सहयोगी सिद्ध हुआ।

राष्ट्रीय उद्यानों की बहुत तेजी से बढ़ती हुई लोकप्रियता संरक्षण के साधन के रूप में पर्यटन की क्षमता का ही प्रमाण है। वास्तव में हमारे सामने कई विशिष्ट उदाहरण हैं जहाँ पर्यटन ने व्यापक रूप से संरक्षण में सहयोग दिया है।

पूर्वी अफ्रिका में कीनिया और तन्जानिया के सेरेंगेटी घास के मैदानों को बड़े पैमाने पर होनेवाले अवैध शिकार और पुराने ढंग की कृषि ने उजाड़ कर रख दिया था। 1970 के अंत में कीनिया और तन्जानिया की सरकारों ने एक संयुक्त संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत सम्पूर्ण सेरेंगेटी क्षेत्र को जबरदस्त पर्यटक आकर्षण केंद्र के रूप में एक विशाल वन प्राणी रिजर्व में परिवर्तित कर दिया। यह एक ऐसा सफल संरक्षण कार्यक्रम उदाहरण है जिसमें सफलतापूर्वक एक भौगोलिक क्षेत्र को पारिस्थितिकी और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनाया गया। निश्चित रूप से इसमें पर्यटन और संरक्षण को एक दूसरे का अनुपूरक और एक दूसरे के लिए लाभदायक बना दिया।

मध्य अफ्रिका में पर्यटकों के लिए सेंट लोरिस् प्रकृति उद्यान के खोले जाने से वन्य प्राणियों के प्रभावी संरक्षण में मदद मिली। पर्यटकों की हुई आय से जंगल के मार्गों और वनपालों के कैम्पों का बनाए रखना संभव हुआ और पर्यटकों के आने जाने ने अनाधिकृत शिकारियों के लिए खुले तौर पर शिकार करना मुश्किल हो गया। बेनिन में यह पाया गया कि पेण्डजारी उद्यान के पर्यटकों के लिए न खोले जाने के कारण इसके विकास की भावी संभावना भी खतरे में पड़ गई है।

भारत में भी राष्ट्रीय उद्यान और प्रकृति अभयारण्यों की स्थापना की धारणा और पर्यटकों के लिए उन्हें खोले जाने का अधिकारियों और पर्यावरणवादियों ने बहुत अधिक समर्थन किया है। इस प्रकार के रिजर्व की बड़ी संख्या की देखरेख काफी हद तक पर्यटकों और टूर ऑपरेटर से प्राप्त धन से ही की जा रही है। उदाहरणार्थ राजस्थान में भरतपुर पक्षी विहार एवं प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व को पर्यटन से प्राप्त धन से ही पूरी या आंशिक तौर पर वित्तीय सहायता दी जाती है।

14.2.4 संस्कृति

संस्कृति को आजकल देश कें पर्यावरण का अविभाज्य अंग माना जाता है और इसे कभी रिक्त न होनेवाले धन का स्रोत समझा जाता है अत: इसे "सुरक्षित रखने" की चिंता भी होने लगी है। यहाँ भी पर्यटन ने अधिकारियों और लोगों को प्रेरित किया कि सांस्कृतिक पर्यटन की धारणा के अंतर्गत अपनी 'सांस्कृतिक विरासत' के अनोखेपन को विदेशी पर्यटकों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। पर्यटकों के लिए नृत्य और अन्य प्रदर्शन दस्तकारी एवं स्मृति चिह्नों का व्यापार आयोजित कर ऐसा किया जा सकता है। एक बार आर्थिक क्षेत्र से जुड़ जाने के बाद किसी देश की संस्कृति अपने संरक्षण के लिए अधिकारियों पर निर्भर रहने के बजाए आत्म निर्भर हो जाती है।

बहुत देशों में पर्यटन ने न केवल स्थानीय सांस्कृतिक परम्परा से आर्थिक मुनाफा कमाया जा सकता है बल्कि सांस्कृतिक परम्परा, कला और कौशल के संरक्षण और पुनरूद्धार के लिए बहुत जबरदस्त प्रेरणा दी है। इसके योगदान के बिना बहुत सी कला और कौशल की परम्पराएं लुप्त हो चुकी होतीं और अन्य बहुत सी सर्वनाश की कगार पर खड़ी होतीं। सांस्कृतिक संरक्षण में पर्यटन के सहायक होने के इतने ढेर सारे उदाहरण हैं जिनका यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं हैं। हालाँकि इनमें से कुछ उदाहरणों को इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

थाईलैण्ड के कुछ नृत्यों और पारम्परिक रेशम उद्योग का पुनरुत्थान पूर्वी यूरोप की लोक संस्कृति, स्वीडेन में डिजाइनरों एवं कलाकारों की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्राचीन कलाओं और कौशलों का पुनर्निर्माण, जमायका की 'पोर्ट रायॅल' श्रृखंला और समस्त कैरीबियन क्षेत्र की समृद्ध संगीत परम्परा, अपनी अनेक रूपों में अफ्रिका की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, दक्षिण पूर्व एशिया के नृत्यों और

दस्तकारियों का पुर्नजन्म और प्रोत्साहन इस बात के अच्छे उदाहरण हैं कि किस प्रकार पर्यटन ने इन देशों में सांस्कृतिक विरासत को लाभान्वित किया है और उनकी परम्परागत वास्तविकता को बनाए रखने में सहयोग दिया है।

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अत्यधिक विविधता के कारण भारत सांस्कृतिक पर्यटन तथा संरक्षण के साधन के रूप में इसकी भूमिका का अच्छा उदाहरण है। भारत में सरकार और निजी एजेंसियों द्वारा प्रत्येक वर्ष पर्यटकों को आकर्षित करने और उनका मन बहलाने के लिए बहुत से सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किए जाते हैं। लद्दाख का उत्सव, मरुस्थल उत्सव, और खजुराहो नृत्य उत्सव इनमें से कुछ ऐसे ही उल्लेखनीय उत्सवों के उदाहरण हैं। इन 'पर्यटक उत्सवों' के माध्यम से विदेशी आगंतुकों के सम्मुख भारतीय संस्कृति को अपनी रंगारंग उत्कर्षता के साथ प्रस्तुत किया जाता है और इनमें मुख्य रूप से भारतीय संगीत एवं नृत्य की शास्त्रीय एवं लोक दोनों ही शैलियाँ, कला तथा हस्तशिल्प, वस्त्र एवं भोजन आदि सम्मिलित होते हैं। भारत की विशाल, अनुपम और मोहित करने वाली सांस्कृतिक विषमता का अनुभव करने के लिए इन उत्सवों में आनेवाले पर्यटकों की संख्या ने अधिकारियों और लोगों दोनों को आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण दबावों के बावजूद अपनी सांस्कृतिक सम्पदा की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन को पृथ्वी की आकर्षक भौतिक विशेषताओं के 'सरंक्षण' की आवश्यकता क्यों है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन ऐतिहासिक स्थलों को सुरक्षित करने का साधन कैसे बना ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संक्षेप में बताइए कि वन्य जीवन के संरक्षण में पर्यटन कैसे सहायक है ?

.....

.....

.....

.....

.....

4) सांस्कृतिक विरासत भी एक महत्वपूर्ण पर्यटक सम्पत्ति हो सकती है। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14.3 भंगुरता

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पर्यटन के संरक्षण में पर्यावरण के संरक्षण की अपार संभावनाएं हैं। ऊपर दिए गए विभिन्न उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सम्पूर्ण विश्व पर्यटन की इस क्षमता का उपयोग कर रहा है। फिर भी इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि पर्यटन और पर्यावरण का संतुलन अत्यन्त नाजुक है। इस संतुलन में कोई साधारण सी गड़बड़ी भी पर्यावरण के लिए विनाश का कारण बन सकती है और पर्यटन की परम्परागत पर्यावरण विनाशक की छवि फिर से ताजा हो सकती है। इस संतुलन के लिए मौलिक खतरा बड़े पैमाने पर अनियोजित पर्यटन से है। हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि पर्यटन अधिकांशत: निजी हाथों में है जो केवल पैसा बटोरने के लिए ही इस व्यापार में हैं न कि पर्यावरण संरक्षण के लिए। इन टूर ऑपरेटरों में पर्यटन सम्पत्ति को आवश्यकता से अधिक शोषित करने की प्रवृत्ति पाई जाती है क्योंकि वह लम्बे समय के प्रभाव की परवाह किए बिना कम समय में ही उन से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लेना चाहते हैं।

परिणामस्वरूप पर्यटन पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित करने का कारण बनता है न कि उसे लाभ पहुँचाने का। और 'संरक्षण' की बात तो दूर, पर्यटन वस्तुत: भौतिक विशेषताओं को नष्ट कर रहा होता है, ऐतिहासिक स्थलों को क्षति पहुँचाता है, वन्य प्राणियों को आहत करता है और संस्कृति को प्रदूषित करता है।

उदाहरणार्थ हजारों, लाखों मैट्रिकटन अपशिष्ट जो मुख्य रूप से जैवीय तौर पर निम्नीकृत न होने वाला है निचले और मध्य नेपाल हिमालय में हर ओर तेजी से बढ़ा है क्योंकि कई पीढ़ियों से इसे यहाँ फेंका जा रहा है। कम जानेवाले हजारों स्मारक भारत में स्थानीय पर्यटकों एवं इन्हें देखने आनेवालों के हाथों से क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। 'प्रत्येक पर्यटन स्थल पर संस्कृतियों का प्रदूषण ऐसा संकट है जिसने वस्तुत: लगभग समस्त विश्व को चिंतित किया है।

14.4 बचाव के मार्ग

पर्यटन नियंत्रण संतुलन बनाए रखने कि कुंजी है क्योंकि अनियंत्रित जन पर्यटन पर्यावरण के लिए कभी लाभदायक नहीं हो सकता। नियंत्रण के प्रयासों के लिए सबसे उत्तम नेतृत्व सरकार का होगा जो अपने देश की आवश्यकताओं, हितों और साधनों के मूल्यांकन के लिए सबसे अच्छी स्थिति में है और पर्यटन का उनके साथ सामंजस्य सुनिश्चित भी कर सकती है। गैर सरकारी हाथों में पर्यटन नियंत्रत नहीं हो सकता क्योंकि गैर सरकारी ऑपरेटर का प्रमुख उद्देश्य लाभ होगा न कि पर्यावरणीय संरक्षण की चिंता करना।

प्रत्येक देश को अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए, अपने संसाधनों का मूल्यांकन करना चाहिए और उन संसाधनों का उपयोग करने के विकल्प भी तय कर लेना चाहिए और तब अपने उद्देश्यों के

दृष्टि से पर्यटन विकास की रणनीति बनानी चाहिए। ऐसी योजनाओं के अनिवार्य कार्यान्वयन के लिए वैधानिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय व्यवस्थाओं के साथ-साथ उचित संचालन कार्य शैली, निवेश, आपसी तालमेल और संगठित ढंग से कार्य करने की संभावना होती है।

पर्यटन और पर्यावरण के मध्य संतुलन चाहने वालों के अनुसार पर्यटन विकास की किस्म और आकार तथा गतिविधियाँ पर्यटक संसाधनों की वहन क्षमता से संबंधित होना चाहिए। इसमें केवल सुविधाएं और अधिसंरचनात्मक सुविधाएं ही नहीं बल्कि क्षेत्र की जैव-भौतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक क्षमता भी शामिल होना चाहिए। (वहन क्षमता के लिए देखिए खंड 4, इकाई-11)

पर्यटकों के अधिक आवागमन से सुविधाओं और अधिसंरचना का ह्रास होता है और सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में तनाव के कारण सम्पूर्ण पर्यावरण को हानि पहुँचती है।

इस प्रकार पर्यटन के दीर्घावधि और निरंतर विकास, संसाधन संरक्षण और पर्यावरण को बरबाद होने से बचाने के लिए वहन क्षमता का मूल्यांकन, पर्यटन विकास के स्तर में संतुलन और वहन क्षमता पर आधारित कार्यकलाप आवश्यक है।

अपने विवेचन को प्रासंगिक बनाने के लिए हम 1980 के विश्व पर्यटन की मनीला उद्घोषणा में से कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं। कई देशों में एक साथ स्थान, सुविधाओं और मान्यताओं का इस्तेमाल पर्यटन संसाधन के रूप में किया जाता है। इन संसाधनों को अनियोजित छोड़ देने पर उनकी विकृति और यहाँ तक कि उनके विनाश का खतरा उत्पन्न हो सकता है। पर्यटन को पर्यटन क्षेत्रों के लोगों के सामाजिक-आर्थिक हितों, पर्यावरण और सबसे अधिक प्राकृतिक संसाधनों के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए क्योंकि यही पर्यटन और ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के मूल आकर्षण हैं। सारे पर्यटन संसाधन मानव जाति की विरासत का एक हिस्सा है। राष्ट्रीय समुदायों और समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रदाय को उनके संरक्षण के लिए आवश्यक कार्यवाई करनी चाहिए। हर समय और विशेषकर संघर्ष के समय ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं क्षेत्रीय स्थलों का संरक्षण प्रदेशों की मूलभूत जिम्मेवारी है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन एवं पर्यावरण संतुलन काफी नाजुक है। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन को नियंत्रण में रखने में अधिकारी किस प्रकार सहायता करते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) देश में पर्यटन के आवागमन को नियंत्रित करते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 सारांश

पर्यटन को पर्यावरण का शत्रु समझना सही नहीं है। पर्यटन स्वभावत: पर्यावरण का विनाशक नहीं है। अतीत में पर्यटन का अदूरदर्शितापूर्ण उपयोग अनियोजित एवं अनियंत्रित विस्तार के कारण पर्यटन के लिए उलझनें पैदा हो गईं। किन्तु अब दिन ब दिन पर्यटन को पर्यावरण के संरक्षण के साधन के रूप में देखा जाने लगा है। फिर भी यह संतुलन बहुत अस्थिर किस्म का है क्योंकि पर्यटन अधिकांशत: गैर सरकारी हाथों में है और अधिक लाभ प्राप्ति के लिए इनके अनियंत्रित हो जाने की संभावना बनी रहती है। अनियंत्रित पर्यटन विनाशकारी ही हो सकता है। केवल पर्यावरणोन्मुख पर्यटन ही सुरक्षा और संरक्षण के साधन के रूप में सफल हो सकता है। इस दिशा में पर्यटन उद्योग में लगे लोग और सरकारी माध्यम दोनों को ही पहल करनी चाहिए। उनको चाहिए कि किसी पर्यटन स्थल की "वहन क्षमता'' को ध्यान में रखते हुए विभिन्न साधनों द्वारा पर्यटन को नियंत्रित करें अन्यथा पर्यटन पर्यावरण को बहुत अधिक और अनिवार्य रूप से हानि पहुँचा सकता है।

14.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) किसी भू-भाग की भौतिक विशेषताएं पर्यटन की महत्वपूर्ण सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति के क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में राजस्व की हानि और स्थानीय अर्थव्यवस्था की बरबादी होगी क्योंकि पर्यटक इन्हें ही देखने आते हैं और उनकी आय उन पर ही निर्भर होती है। अत: स्वयं को टिकाऊ बनाने के लिए पर्यटन को पर्यटकों को आकर्षित करने वाली भौतिक विशेषताओं के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए। देखिए उपभाग 14.2.1

2) पर्यटन न केवल अपने स्वार्थों के लिए ऐतिहासिक स्थलों को सुरक्षित करने में सहयोग देता है (अर्थात अपने पर्यटकों के लिए आकर्षण बनाए रखना), बल्कि स्मारकों के संरक्षण के लिए, जिसमें बहुमूल्य तकनीकों का उपयोग होता है, आवश्यक धन भी उपलब्ध कराया है। ऐसे प्रयासों के उदाहरण मिस्र एवं ग्रीको-रोमन क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं। देखिए उपभाग 14.2.1

3) वन्य जीवन संरक्षण में पर्यटन पर्यटकों में 'संरक्षण अभ्यास' को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण सहयोगी सिद्ध हुआ है। स्थानीय लोगों को वैकल्पिक रोजगार देकर भी सहयोग किया है अन्यथा वह अपनी जीविका के लिए जंगल की धरती पर ही निर्भर रहते। उसने रिजर्वों के रखरखाव एवं पर्यावरण हेतु धन उपलब्ध कराया और लोगों में चेतना और जागरुकता पैदा की है। देखिए उपभाग 14.2.3

4) किसी देश की संस्कृति इसकी एक महत्वपूर्ण सम्पत्ति होती है क्योंकि इसे विदेशी पर्यटकों के लिए बाजार में बेचकर लाभ कमाया जा सकता है। इस प्रकार लोगों की जीवन शैली को सुरक्षित रखने के साथ-साथ आर्थिक रूप से उपयोगी भी बनाया जा सकता है। देखिए उपभाग 14.2.4

बोध प्रश्न 2

1) हालाँकि अभी हाल ही में पर्यटन और पर्यावरण चिंता को एक साथ प्रस्तुत किया गया है किंतु दोनों के मध्य संतुलन अस्थिर है। टूर ऑपरेटर इसके प्रमुख कारण हैं क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है। अत्यधिक लाभ कमाने का प्रयत्न अनियंत्रित और अबाधित रूप से चलता रहता है और दीर्घवधि के लाभों के साथ समझौता करना पड़ता है। देखिए भाग 14.4

2) देश में पर्यटकों के आवागमन को नियंत्रित करने के लिए, देश या क्षेत्र की वहन क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। क्षमता में केवल सुविधाएं या अधिसंरचना ही सम्मिलित नहीं है बल्कि उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक व्यवस्था भी सम्मिलित है क्योंकि एक क्षेत्र अपनी क्षमता के अनुसार ही विदेशियों का आवभगत कर सकता है, इसके आगे तनाव और उलझनें ही पैदा होंगी। यह क्षेत्र विशेष के पर्यावरण और पर्यटन और दोनों के लिए लाभदायक होगा। देखिए भाग 14.4